।। श्री श्रीगुरु गौराङ्ग जयतः ।।

गौड़ीय वैष्णव गीत

वैष्णव आचार्यों की प्रार्थनायें एवं भजन

(निजी वितरण हेतु)

समर्पण

सम्पूर्ण विश्व में गौड़ीय वैष्णव संस्कृति का सरल-
सहज रूप से प्रचार करने वाले अंतर्राष्ट्रीय
कृष्णभावनामृत संघ के संस्थापकाचार्य
श्री श्रीमद् ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद
के चरणकमलों पर समर्पित

भूमिका

यह पुस्तिका गौड़ीय वैष्णव आचार्यों द्वारा रचित प्रार्थनाओं और भजनों का लघु संग्रह है। इसका उद्देश्य नये भक्तों को उन संस्कृत और बंगाली प्रार्थनाओं एवं भजनों से अवगत करवाना है जो प्रतिदिन हमारे मंदिरों में गाये जाते हैं। इसमें दैनिक, साप्ताहिक तथा वार्षिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों के दौरान गाये जाने भजनों का संग्रह किया गया है। साथ ही कुछ अन्य लोकप्रिय भजनों को भी स्थान दिया गया है।

भक्तियोग के मार्ग पर आध्यात्मिक प्रगति हेतु प्रार्थनायें करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। श्रील रूप गोस्वामी अपने ग्रंथ भक्तिरसामृतसिन्धु में नृसिंह पुराण से उद्धृत करते है – ''भगवान् श्रीकृष्ण के विग्रह के समक्ष आकर विभिन्न प्रार्थनाओं का उच्चारण करने वाला व्यक्ति तुरन्त समस्त पापफलों से मुक्त हो जाता है और अवश्यमेव वैकुण्ठ में प्रवेश करता है।''

ब्रह्मसंहिता में ब्रह्माजी द्वारा भगवान् कृष्ण की स्तुतियों के विषय में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती लिखते हैं, ''पाठकों से आग्रह है कि वे दैनिक कार्य के रूप में इन स्तुतियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और इनकी भावनाओं में प्रवेश करने का प्रयास करें।''

प.पू.सत्स्वरूपदास गोस्वामी अपनी पुस्तक *वन्दनम्* में शास्त्रोक्त प्रार्थनाओं के विषय में लिखते हैं – ''गाते हुए उनका अभ्यास करो, उन्हें याद करो, उनके साथ जीओ, अपने जीवन की परिस्थितियों में उनका प्रयोग करो। उनकी शरण लो।''

हम उन सभी भक्तों का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में इस पुस्तिका के प्रकाशनार्थ सहायता की है, और हृदय से प्रार्थना करते हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण उनपर अपनी कृपावृष्टि करें।

– *प्रकाशक*

श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद प्रणति

नम ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले ।
श्रीमते भक्तिवेदान्त स्वामिनिति नामिने ।।

मी कृष्णकृपाश्रीमूर्ती अभयचरणारविंद भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद यांना सादर प्रणाम करतो. भगवान श्रीकृष्णांच्या चरणकमलांचा पूर्ण–आश्रय घेतल्याने ते भगवान श्रीकृष्णांना अतिशय प्रिय आहेत.

नमस्ते सारस्वते देवे गौरवाणी प्रचारिणे ।
निर्विशेष शून्यवादी पाश्चात्य देश तारिणे ।।

गुरुदेव! आप श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी के प्रिय सेवक हैं। आप कृपा करके श्रीचैतन्य महाप्रभु के संदेश का प्रचार कर रहे हैं तथा निर्विशेष और शून्यवाद से व्याप्त पाश्चात्य जगत् का उद्धार कर रहे हैं। आपके चरणों पर मेरा सादर प्रणाम है।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रणति

नम ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले ।
श्रीमते भक्तिसिद्धांत सरस्वती इति नामिने ।।

मैं कृष्णकृपाश्रीमूर्ति भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी श्रील प्रभुपाद के चरणों पर सादर प्रणाम अर्पण करता हूँ। भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों का पूर्ण आश्रय लेने के कारण वे उन्हें अत्यन्त प्रिय हैं।

श्रीवार्षभानवीदेवी दयिताय कृपाब्धये ।
कृष्णसम्बन्धविज्ञानदायिने प्रभवे नम:।।

श्रीवार्षभानवीदेवी दयित दास (श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती के दीक्षा का नाम) के चरणकमलों पर मेरा प्रणाम है। वे श्रीमती राधारानी के विशेष कृपापात्र हैं तथा कृपावश सभी जीवों को श्रीकृष्ण सम्बन्धी विज्ञान प्रदान करते हैं।

माधुर्योज्ज्वल प्रेमाढ्य श्रीरूपानुगभक्तिद।
श्रीगौरकरुणाशक्ति विग्रहाय नमोऽस्तुते।।

जो श्रीचैतन्य महाप्रभु की करुणाशक्ति के मूर्तिमान् स्वरूप हैं, जो श्रीराधाकृष्ण की माधुर्यभावयुक्त भक्ति प्रदान करते हैं, और जो श्रील रूप गोस्वामी प्रदत्त भक्तिमार्ग का पूर्ण पालन करते हैं, मैं उन श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद को सादर प्रणाम करता हूँ।